ओ३म्

वैदिक—

संस्कृति के दो महान प्रतीक

[शिखा-सूत्र]

लेखक :—

श्री जगदीशचन्द्र 'विद्यार्थी'

[illegible] ग्रन्थागार

कृष्णगंगा, मथुरा

Scanned with CamScanner

भूमिका

सा संस्कृति प्रथमा विश्ववारा

वैदिक संस्कृति ही विश्व-संस्कृति है। वह प्रथम और महान् संस्कृति है। संस्कृति वह है जो मनुष्य की आत्मा का संस्कार करके उसे सुसंस्कृत करती है।

शिखा वैदिक संस्कृति की ध्वजा है। वह बताती है वैदिक संस्कृति ऊर्ध्वगामी है, ऊँचे की ओर ले जाने वाली है। वैदिक संस्कृति मानव संस्कृति है। नीचे के ८३९९९९९ योनि-चक्र को पार करके मानव ऊँचा उठकर मानव बन पाया है। अभी उसे और ऊँचा उठना है। शिखा ब्रह्म-रन्ध्र के ऊपर रहती है। वह बताती है ब्रह्म-प्राप्ति मानव का चरम लक्ष्य है, यह उन्नति का उच्चतम शिखर है। उस शिखर तक, चोटी तक पहुँचने के आदर्श की हमारी यह चोटी एक महान् प्रतीक है।

'सूत्र' यानी यज्ञोपवीत वैदिक संस्कृति का प्राण है। यज्ञोपवीत वैदिक संस्कृति का प्राण है। यज्ञोपवीत का अर्थ है—यज्ञ के समीप पहुँचना, परोपकारमय जीवन के लिए दीक्षित होना। हमारा जीवन यज्ञ के लिए है। यज्ञोपवीत इसी उदात्त आदर्श का दूसरा महान् प्रतीक है यज्ञोपवीत के तीन धागे—ऋषि-ऋण, पितृऋण एवं देवऋण इन तीनोंका स्मरण कराते हैं। जीवन यात्राके हर पड़ाव पर हमारा यह सूत्र हमें याद दिलाता है—तेरा जीवन दूसरों के लिए है, तूने दूसरों के लिये जीने का व्रत लिया है, प्रतिज्ञा की है। हर मनुष्य दूसरो के लिये है, तू यह कहकर कि 'मैंने क्या संसार का ठेका लिया है' किसी सेवा-कार्य से अलग नहीं रह सकता। [illegible] ब्राह्मणके रूपमें संसार से अज्ञान के मिटाने का, क्षत्रिय के रूप में संसार से अन्याय के मिटाने का और वैश्य के रूपमें संसार के हर कोने से अभाव के मिटाने का तूने ठेका लिया है।

यह आदर्श वैदिक संस्कृति का प्राण है, आत्मा है। विश्व-शा[illegible]ना यह राजमार्ग है। खेद है कि शिखा-सूत्र का धारण आज एक र[illegible] बन कर रह गया है, इसीलिये उसकी उपेक्षा भी हो रही है। प्रभु ह[में] शक्ति-भक्ति दें कि हम अपने आचरण द्वारा वैदिक संस्कृति के [illegible] प्रतीको शिखा-सूत्र की महत्ता प्रतिष्ठापित करसकें। —[illegible]

Scanned with CamScanner

ओ३म्

वैदिक संस्कृति के दो महान् प्रतीक—

शिखा-सूत्र

[ले० श्री जगदीशचन्द्र विद्यार्थी, विद्यावाचस्पति]

शिखा [चोटी] का महत्व

लार्ड मैकाले द्वारा प्रचलित वर्तमान भारतीय शिक्षामें शिक्षित और दीक्षित ऋषि-सन्तान आज अपने सिर पर चोटी रखने में लज्जा अनुभव करती है और यज्ञोपवीत धारण करना उसे एक भार प्रतीत होता है। पाश्चात्य सभ्यता की चकाचौंध में चुन्धयाने वाले नवयुवक अपने धार्मिक चिह्नों को छोड़ते चले जा रहे हैं और :—

बाबूभ्यो धर्म हीनेभ्यः स्थित्वा मूत्र विसर्जिभ्यः।
भीतं सूत्र गतं भूमौ शिखा भीता दिवं गतः॥

धर्महीन तथा खड़े होकर मूत्र विसर्जन करने वाले बाबूओं से डर कर सूत्र (यज्ञोपवीत) पाताल में पहुँच गया और शिखा आकाश में। कितने दुःख की बात है कि जिस शिखा की रक्षा के लिये महाराणा प्रताप और वीर शिवाजी ने अपने प्राणों की बाजी लगा दी, वीर हकीकत राय और गुरु गोविन्द सिंह के बच्चों ने अपने प्राणों की आहुति दे दी उसी शिखा को आज-

Scanned with CamScanner

कल के बाबू स्वयं काटकर फेंक रहे हैं और अपनी संस्कृति पर अपने हाथों से कुठाराघात कर रहे हैं। पाश्चात्य भौतिकवाद से प्रभावित नवयुवक पूछते हैं "हम शिखा क्यों रक्खें ?" हम यहाँ भारतीय और पाश्चात्य दोनों दृष्टि कोणों से इस का समाधान प्रस्तुत करने का प्रयत्न करेंगे।

वेद भारतीय संस्कृति का मूलाधार हैं। धर्म की जिज्ञासा वालों के लिये तो श्रुति ही परम प्रमाण है, अतः हमें पहले तो यह देखना चाहिये कि वेद इस सम्बन्ध में क्या कहते हैं ? वेद में चोटी रखने की स्पष्ट आज्ञा है। देखिये :—

यत्र बाणाः सम्पतन्ति कुमारा विशिखाऽइव।(यजु०१७।४८

इस मन्त्र में 'विशिखा' पद आया है इसका अर्थ है "विशिष्टा—दीर्घा, गोखुर परिमाण शिखा चूड़ा येषां तादृशाः कुमारा इव" लम्बी और गोखुर परिमाण वाली चोटी वाले कुमारों की भांति। महर्षि दयानन्द ने इसका अर्थ किया है "बिना चोटी के या बहुत चोटियों वाले।' इस प्रकार इस मन्त्र में शिखा का मूल दीख रहा है। अब एक और मन्त्र देखिये:—

आत्मन्नुपस्थे न वृकस्य लोम
मुखे श्मश्रूणि न व्याघ्र लोम।
केशा न शीर्षन्यशसे श्रिय शिखासिँ
हस्य लोमात्विषिरिन्द्रियाणि ॥

(यजु० १६।६२)

यहाँ पर यश और लक्ष्मी की प्राप्ति के लिये शिखा धारण का विधान किया गया है और शिखा के बालों को सिंह के लोमों के समान बताया गया है।

शिखिभ्यः स्वाहा। (अथर्व० १६।२२।१५)

Scanned with CamScanner

फल के बाबू स्वयं काटकर फैंक रहे हैं और अपनी संस्कृति पर अपने हाथों से कुठाराघात कर रहे हैं। पाश्चात्य भौतिकवाद से प्रभावित नवयुवक पूछते हैं "हम शिखा क्यों रक्खें ?" हम यहाँ भारतीय और पाश्चात्य दोनों दृष्टि कोणों से इस का समाधान प्रस्तुत करने का प्रयत्न करेंगे।

वेद भारतीय संस्कृति का मूलाधार हैं। धर्म की जिज्ञासा वालों के लिये तो श्रुति ही परम प्रमाण है, अतः हमें पहले तो यह देखना चाहिये कि वेद इस सम्बन्ध में क्या कहते हैं ? वेद में चोटी रखने की स्पष्ट आज्ञा है। देखिये :—

यत्र बाणाः सम्पतन्ति कुमारा विशिखाऽइव ।(यजु०१७।४८

इस मन्त्र में 'विशिखा' पद आया है इसका अर्थ है "विशिखा-दीर्घा, गोखुर परिमाण शिखा चूड़ा येषां तादृशाः कुमारा इव" लम्बी और गोखुर परिमाण वाली चोटी वाले कुमारों की भांति। महर्षि दयानन्द ने इसका अर्थ किया है "बिना चोटी के या बहुत चोटियों वाले।' इस प्रकार इस मन्त्र में शिखा का मूल दीख रहा है। अब एक और मन्त्र देखिये:—

आत्मन्नुपस्थे न वृकस्य लोम
मुखे श्मश्रूणि न व्याघ्र लोम।
केशा न शीर्षन्यशसे श्रियै शिखासिं
हस्य लोमात्विषिरिन्द्रियाणि ॥

(यजु० १९।९२)

यहाँ पर यश और लक्ष्मी की प्राप्ति के लिये शिखा धारण का विधान किया गया है और शिखा के बालों को सिंह के लोमों के समान बताया गया है।

शिखिभ्यः स्वाहा। (अथर्व० १९।२२।१५)

Scanned with CamScanner

डा० ह्यूमन–

"मैंने कई वर्ष भारत में रहकर भारतीय संस्कृति का अध्ययन किया है। वहाँ के निवासी बहुत काल से सिर पर चोटी रखते हैं, जिसका जिक्र वेदों में भी पाया जाता है। दक्षिण में तो आधे सिर पर गोखुर के समान चोटी रखते हैं। उनकी बुद्धि-विलक्षणता देख कर मैं बहुत प्रभावित हुआ हूँ। अवश्य ही बौद्धिक विकास में चोटी बड़ी भारी सहायता देती है। सिर पर चोटी या बड़े बाल रखना लाभदायक है। यूरोप का कोई भी देश ऐसा नहीं जो सिर पर बड़े बाल न रखता हो। मेरा तो हिन्दू धर्म में अगाध विश्वास है। मैं स्वयं भी चोटी रखने का कायल हो गया हूँ।"

(गार्ड मैगजीन अङ्क २५८ पृ० १२३, सं० १८६६)

डा० आई० ई० क्लार्क एम० एम० डी०—

"मैं जब चीन में भ्रमण करने गया, तब मुझे यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि चीनी लोग भी भारतवासियों की तरह आधे से अधिक सिर पर बड़े बाल रखते हैं। मैंने जब से इस विज्ञान की खोज की है तब से मुझे विश्वास हो गया कि आर्य लोगों का प्रत्येक नियम या कार्य विज्ञान से ओत प्रोत है और चोटी रखना आर्य लोगों का धर्म ही नहीं है अपितु सुषुम्णा के केन्द्रों की रक्षा के लिए ऋषि मुनियों की खोज का विलक्षण चमत्कार है।"

मि० अर्ल थामसन–

"सुषुम्णा की रक्षा आर्य लोग चोटी रख कर करते हैं और यूरोप के देश सिर पर बड़े बाल रख कर। मैं इन दोनों में से विज्ञान की दृष्टि से चोटी रखना अधिक उपयोगी समझता हूँ,

Scanned with CamScanner

क्योंकि यह ठीक उसी स्थान की रक्षा करती है जिसकी मनुष्य जीवन के लिये सबसे अधिक आवश्यकता है।"

(अलार्म मेगजीन सन १६२१ अङ्क ७१ पृष्ठ १६६)

शास्त्रीय प्रमाणों के पश्चात् अब विज्ञान और आयुर्वेद के अनुसार चोटी के लाभों पर विचार किया जाता है।

अन्तरेण तालुके य ऐष स्तन इव अबलम्बेत,स इन्द्रयोनिः
यत्र असौ केशान्तो विर्वतते व्यपोह्य शीर्ष कपाले ॥

(तैत्तिरीय उपनिषद् शिक्षावल्ली ६।२)

मनुष्य के मुख में तालु के मध्य में जो एक स्तन के आकार का माँस पिण्ड लटकता है, उसके आगे केशों का मूल स्थान ब्रह्मरन्ध्र है। वहाँ शिर के दोनों कपालों का भेदन करके निकली हुई सुषुम्णा नाड़ी है, वह इन्द्रयोनि अर्थात् परमात्मा की प्राप्ति का द्वार है। वैद्य लोग ब्रह्मरन्ध्र को मस्तिष्क तथा सुषुम्णा के मूल स्थान को मस्तुलिंग कहते हैं। सम्पूर्ण शरीर में प्रधान अङ्ग है सिर। मनुष्य जीवन का केन्द्र भी सिर है। सिर में दो शक्तियाँ रहती हैं, एक ज्ञान-शक्ति दूसरी कर्म-शक्ति। इन दोनों विभागों का मूल स्थान मस्तिष्क और मस्तुलिंग है। मस्तिष्क ज्ञान-शक्ति का भण्डार है और मस्तुलिंग कर्म-शक्ति का। मस्तिष्क के साथ ज्ञानेन्द्रियों—आँख, कान, नाक जिह्वा और त्वचा का सम्बन्ध है और मस्तुलिंग के साथ कर्मेन्द्रियों—वाणी हाथ, पैर, गुदा, उपस्थ का सम्बन्ध है। मस्तिष्क और मस्तुलिंग जितने ही सामर्थ्यवान् होंगे ज्ञानेन्द्रियाँ और कर्मेन्द्रियाँ उतनी ही बल और शक्ति सम्पन्न होंगी। मस्तिष्क ठण्ड चाहता है और मस्तुलिंग गर्मी। मस्तिष्क को ठण्ड प्रदान करने के लिये क्षौर कराना आवश्यक है और मस्तुलिंग को गर्मी पहुँचाने के लिये गो-खुर परिमाण की चोटी आवश्यक है।

Scanned with CamScan

मस्तुलिंग को ऊष्मा (गर्मी) चाहिये और ऊष्मा भी न न्यून न अधिक—मध्यम चाहिये। यह ऊष्मा हैट या वस्त्रादि से नहीं आ सकती यह तो शिखा के द्वारा ही प्राप्त की जा सकती है। जो वस्तु जिससे उत्पन्न होती है, वही उसकी वास्तविक सहायक होती है। जैसे घड़ा मिट्टी से बनता है, उसके प्रत्येक अङ्ग की पूर्ति भी मिट्टी के द्वारा होगी। मस्तुलिंग सिर का भाग है उसकी रक्षा भी सिर से उत्पन्न पदार्थ–बालों से ही होगी, हैट और टोपी आदि से नहीं। अतः चोटी रखना आवश्यक है।

पाठकगण पूछ सकते हैं कि हैट के मुकाबले में शिखा में क्या विशेषता है ? वैज्ञानिक दृष्टिकोण से हमें चोटी में हैट से अधिक गुण मिलेंगे। कुछ उदाहरणों से यह बात अच्छी प्रकार समझ में आजायेगी। ऊन को प्रायः सभी लोग जानते हैं। ऊन क्या है ? भेड़ के शरीर के बाल—ऐसे ही बाल जैसे हमारे सिरों पर होते हैं, अतः इन दोनों के गुणों में समानता होना भी अनिवार्य है। ऊन की विशेषताओं को जान लेने पर हमें शिखा की विशेषताएँ स्वयं ज्ञात हो जावेंगी।

(१) ऊन की पहली विशेषता है शीतादि से रक्षा। भयंकर सर्दी में पशुओं की रक्षा उनके घने बालों के द्वारा ही होती है।

(२) ऊन सर्दी की भाँति बाहर की गर्मी से भी शरीर की रक्षा करता है। बर्फ को गर्मी से बचाने के लिये कम्बल में लपेट देते हैं जिससे बाहर की गर्मी उस पर प्रभाव नहीं डालती और वह वैसी ही बनी रहती है।

(३) ऊन बिजली के प्रवाह को बाहर से अन्दर और अन्दर से बाहर नहीं आने देता। यदि किसी व्यक्ति को बिजली पकड़ले तो ऊनी कम्बल डालकर छुड़ाया जाता है।

Scanned with CamScan

जब शरीर से अलग हुए बालों में ये गुण सदा विद्यमान रहते हैं तब शरीरस्थ बालों में तो ये गुण निश्चित रूप से रहेंगे ही अतः शिखा द्वारा मर्म स्थान की अधिक रक्षा होती है, इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है।

चोटी सिर के सबसे ऊंचे और उठे हुए भाग के मध्य में रक्खी जाती है जिसको शीर्ष कहते हैं। शारीरिक विज्ञान के अनुसार जिस स्थान पर शिखा रक्खी जाती है वहाँ एक मर्म स्थल माना गया है जिसे पीनियल ग्लैण्ड (Pineal Gland) कहा जाता है। इसके नीचे एक विशेष प्रकार की ग्रंथि होती है जिसे पिचुट्री (Pituetry) कहते हैं। इस ग्रन्थि में एक रस बनता है जो नाड़ियों द्वारा सारे शरीर में व्याप्त होकर शरीर को हृष्ट पुष्ट एवं बलशाली बनाता है। शिखा द्वारा इन ग्रन्थियों को अपना कार्य करने में बड़ी सहायता मिलती है और वे दीर्घकाल तक अपना कार्य करती रहती हैं। इसमें मनुष्य न केवल दीर्घकाल तक स्वस्थ रह कर जीवन व्यतीत करता है अपितु उसकी ज्ञान-शक्ति भी अक्षुण्ण बनी रहती है।

सुश्रुत के अनुसार भी जहाँ पर शिखा रक्खी जाती है, वह अत्यन्त कोमल स्थान है और शिखा के लम्बे बाल उनकी रक्षा करते हैं। शरीर में १०७ मर्म स्थान हैं। इनमें ६ ऐसे स्थान हैं जिनमें चोट लगने से तत्काल मृत्यु होजाती है। इसीलिये सुश्रुत में कहा है:—

मस्तकाभ्यान्तरत उपरिष्टात् शिरसन्धि सन्निपातो।
रोमावर्तोऽधिपतिः तत्रापि सद्य एव (मरणम्)(सु.६।२०)

मस्तिष्क के भीतर ऊपर की ओर जहाँ पर बालों का आवर्त (भंवर) है वहाँ शिरा और सन्धि का मेल है। वह अधिप नामक मर्म स्थान है। यहाँ पर चोट लगने से तत्काल

Scanned with CamScanner

मृत्यु होती है। हमारे महर्षियों ने इस मर्मस्थान की रक्षा के लिये चोटी का विधान किया है। इस स्थान पर गोखुर परिमाण चोटी रखने से शीतकाल में शीत से, भीषण गर्मी में गर्मी से और वर्षा में जल-वर्षण के आघात से रक्षा होती है।

मानव शरीर को एक दुर्ग की उपमा दी जा सकती है। पृथ्वी, जल, वायु, तेज और आकाश इस शरीर रूपी दुर्ग के पाँच तट हैं। रोम, चर्म, रुधिर, मांस, अस्थि, मज्जा और शुक्र सात गर्भ गृह हैं। साढ़े तीन लाख नाड़ियाँ छोटी कोठियाँ हैं। मूलाधार, स्वधिष्ठान, मणिपूर, सूर्य, अनाहत, विशुद्ध, आज्ञा और सहस्रार आठ चक्र आठ महल हैं। आठवें महल में सम्राट् रूप ज्योति स्वरूप परब्रह्म का निवास है। जैसे दुर्ग के राज-निवास स्थल में विशेषता के लिए ध्वज लगा देते हैं उसी प्रकार शरीर रूपी दुर्ग में ब्रह्मरन्ध्र में जो ब्रह्म का निवास स्थान है वहीं शिखा रखने का विधान है। जैसे किसी स्थान की विशेषता बतलाने के लिए उस स्थान पर ध्वज लगा देते हैं, उसी प्रकार इस पवित्र स्थान को बतलाने के लिए चोटी अत्यन्त उपयुक्त भण्डी है। मस्तिष्क एक विशाल समुद्र के समान है और चोटी कुतुबनुमा के समान। जिस यान के कप्तान के पास कुतुबनुमा नहीं है उसका यान समुद्र में मारा मारा फिरेगा, उसे सीधा मार्ग नहीं मिल सकता, इसी प्रकार जिस व्यक्ति ने चोटी रूपी कुतुबनुमा का सहारा नहीं रक्खा उसकी नौका संसार रूपी समुद्र में भटकती फिरेगी, उसे ब्रह्मदर्शन होना असम्भव है। यह शिखा ब्रह्मरन्ध्र को सूचित करती है, इसलिये हमारे आचार्यों ने वहाँ शिखा रखवा कर सन्ध्या के समय गायत्री मन्त्र से शिखा-बन्धन की प्रणाली प्रचलित की है जिससे चित्त-वृत्ति को ब्रह्मध्यान की ओर केंद्रित किया जा सके।

Scanned with CamScanner

गीता के अनुसार 'ऊर्ध्वमूलमधः शाखम्' (गीता१५।१) हमारा शरीर वृक्ष रूप है। इसका मूल सिर है। शिखा के केश इसकी जड़ें हैं। कन्धे से लेकर कमर तक का भाग इसकी शाखायें हैं। नाना प्रकार के विषय इसके पत्ते हैं। सुकर्म और कुकर्म इसके फूल हैं तथा सुख और दुःख इसके फल हैं। किसी वृक्ष की जड़ें कभी काटी नहीं जातीं क्योंकि उनके काटने से वृक्ष सूख जाता है। अतः शरीर रूपी वृक्ष की उन्नति और वृद्धि के लिए शिखा रखना आवश्यक है।

मस्तिष्क का केन्द्र अर्थात् चोटी का स्थान वृक्ष की 'टेपरूट' के समान है और चोटी के बाल टेपरूट के बालों के समान हैं। जैसे टेपरूट के के बाल पृथ्वी के भीतर से पानी खेंचते हैं उसी प्रकार चोटी के बाल हवा में से ओपजन (Oxygen) खेंचते हैं। जिस प्रकार टेपरूट के ऊपर के बाल अन्दर से खोखले होते हैं उसी प्रकार मनुष्य के बाल भी अन्दर से पोले होते हैं। जिस प्रकार टेपरूट के ऊपर के बाल छील डालने से वृक्ष पानी नहीं खींच सकता इसी प्रकार चोटी के बाल काट डालने से मस्तिष्क प्राणवायु नहीं खेंच सकता। अतः चोटी रखना प्रत्येक व्यक्ति के लिए आवश्यक है चाहे वह मुसलमान या ईसाई ही क्यों न हो। जिसने अपने सिर के ऊपर घुप्पेदार चोटी रखी हुई है उसने अपने सिर पर प्राणवायु खेंचने वाला पम्प लगाया हुआ है। वह व्यक्ति प्रकृति की सूक्ष्म से सूक्ष्म शक्तियों को प्राप्त कर सकता है। गम्भीर समस्याओं को सुलझा सकता है और योगाभ्यास करने के योग्य है।

जङ्गल के पशु जो कभी वस्त्र धारण नहीं करते रुग्ण नहीं होते अपितु हृष्ट पुष्ट बने रहते हैं। कारण स्पष्ट है। उनके

Scanned with CamScanner

शरीर के बाल खुले रहते हैं और वे ठीक रूप में प्राणवायु खेंचते रहते हैं।

लम्बी लम्बी जटाएं पृथ्वी की शक्तियों को खूब खेंचती हैं। जिस व्यक्ति के सिर पर इतनी लम्बी जटाएं हों कि बैठने पर पृथिवी तक पहुँचे, उनमें एक विशेष आकर्षण होता है। इसका कारण यह है कि मस्तिष्क का पृथ्वी के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध हो जाता है, क्योंकि पृथिवी की शक्तियां जटाओं के द्वारा मस्तिष्क में पहुँचने लगती हैं जिससे उसे विशेष आनन्द प्राप्त होता है। पाठक कहेंगे युक्ति न प्रमाण-'मान न मान मैं तेरा महमान।' इसका प्रमाण यह है कि हम सन्ध्या करते समय प्रतिदिन मार्जन करते हुए पढ़ते हैं 'ओं भूः पुनातु शिरसि।' अर्थात् पृथिवी हमारे सिर में पवित्रता करे, अतः स्पष्ट है चोटी के द्वारा हम पृथिवी की समस्त शक्तियों को अपने शरीर में खेंचते हैं।

अमेरिका के डाक्टरों के मतानुसार लम्बी दाढ़ी, लम्बी मूंछें तथा सिर के लम्बे बाल वीर्य को सुरक्षित रखने में सहायक होते हैं। लम्बी शिखा वीर्य रक्षा के लिये परम आवश्यक है। प्राचीन काल के ब्रह्मचारी तथा बानप्रस्थी इसीलिये जटाधारी होते थे।

भारतीय आचार्यों तथा ऋषि मुनियों के मतानुसार भी शिखा से बुद्धि, बल, आयु और तेज की वृद्धि होती है जैसा कहा भी है:—

दीर्घायुष्ट्वाय बलाय, बर्चसे शिखायै वषट्।

अर्थात् दीर्घायु, बल और तेज के लिए शिखा को स्पर्श करना है। यहाँ प्रश्न होता है कि बल, आयु और तेज की वृद्धि के साथ चोटी का क्या सम्बन्ध है? इस प्रश्न के समाधान के लिए हमें मानव शरीर रचना को समझना होगा।

Scanned with CamScanner

मानव शरीर की रचना पर ध्यान देने से ज्ञात होता है कि सम्पूर्ण शारीरिक प्रवृत्तियों का केन्द्र हमारा मस्तिष्क है। क्या मानसिक क्या शारीरिक सभी प्रकार की क्रियाओं का संचालन उसी के द्वारा होता है। चोटी का स्थान ही काम-नाड़ियों का केन्द्र है। यदि इस स्थान को भड़का दिया जाये तो सभी इन्द्रियों में भड़क पैदा होजाती है। यदि हमारा मस्तिष्क स्वस्थ है, शक्ति-सम्पन्न है तो मनुष्य भी स्वस्थ रहता हुआ वेद की 'जीवेम शरदः शतम्' इस आज्ञानुसार सौ वर्ष ही क्या उससे भी दीर्घायु प्राप्त कर सकता है। मस्तिष्क को स्वस्थ, सबल और शक्ति-सम्पन्न बनाने के लिए चोटी रखना एक अमोघ उपाय है।

शिखा के साथ बल, वीर्य, स्वास्थ्य और आध्यात्मिक उन्नति का गहरा सम्बन्ध है। इस विषय में हरिवंश पुराण में एक कथा आती है। महर्षि वशिष्ठ का सगर नामक एक विश्व-विजयी क्षत्रिय शिष्य था। पश्चिम देश के कुछ राजाओं ने मिलकर उसके पिता को मार डाला। सगर ने पिता की मृत्यु का बदला चुकाने के लिए उन पर आक्रमण किया। वे भयभीत होकर वशिष्ठ की शरण में आये और अपनी प्राणरक्षा की प्रार्थना की। महर्षि ने उन्हें अभयदान प्रदान कर दिया परन्तु जब उन्हें पता चला कि उनका विजेता उनका अपना ही शिष्य है तो दोनों ओर की प्रतिज्ञा-रक्षा के लिए वशिष्ठजी ने आज्ञा दी कि इन लोगों का प्राणहरण न करो, इनकी शिखा काट लो, जिससे ये सब शक्तिहीन होकर मृतवत् हो जायेंगे। शिष्य ने ऐसा ही किया और लोगों को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि वे सभी निर्जीव से और प्रभाव शून्य हो गये।

ईसाइयों में भी इसी प्रकार की एक कथा प्रचलित है। सान्सन एगोनिस्टिस (Sonson Agonistes) के प्रताप से

Scanned with CamScanner

अन्य राजागण काँपते थे। उसके मारने के लिए बहुत प्रयत्न किये, परन्तु व्यर्थ। अन्त में उन लोगों को पता लगा कि उसके सिर पर शिखा है (At last they discovered that all his power lay on account of the tuft on his head.) उसी के कारण उसमें इतनी शक्ति है। छल द्वारा निद्रा की अवस्था में उन्होंने साम्सन की चोटी कटवादी। प्रातः काल नींद टूटने पर उन्होंने देखा कि शिखा कट गई और सभी शक्ति नष्ट हो गई। परिणाम स्वरूप वह शत्रुओं से परास्त हो गया।

शिखा से ब्रह्मचर्य की रक्षा, बल, आयु और तेज की प्राप्ति ही नहीं होती अपितु गोखुर परिमाण की शिखा रखने से ब्रह्मशक्ति का भी आकर्षण होता है। पाश्चात्य जगत् के सुप्रसिद्ध विज्ञानवेत्ता विक्टर ई० क्रोमर (Victor E. Cromir) ने लिखा है—

"In meditation on receives the virllic influse. While concentrating one: pours it out. If one however concentrates ones' mind upon God, there is an out-going and inflowing process set up. The conentration of mind upon words sends a rush of this force through the top of the head and the response comes as a fine rain of soft magnetism. These two forces cause a beautiful display of colour to the higher vision, The out-pouring from above is beautiful beyond description."

(Vril Kalpaka)

Scanned with CamScanner

"ध्यान के समय ओज-शक्ति प्रकट होती है। किसी वस्तु पर चिन्तन शक्ति एकाग्र करने से ओज-शक्ति उसकी ओर दौड़ती है। यदि परमात्मा के ऊपर चित्त एकाग्र किया जाये तो मस्तिष्क के ऊपर शिखा के रास्ते ओज-शक्ति प्रकट होती है। परमात्मा की शक्ति उसी मार्ग से मनुष्य के भीतर आया करती है। सूक्ष्म दृष्टि सम्पन्न योगी इन दोनों शक्तियों के सुन्दर रङ्ग को भी देख लेते हैं। जो शक्ति परमात्मा से अपने भीतर आती है उसका वर्णन नही किया जा सकता।"

इस प्रकार आधुनिक विज्ञान से भी सिद्ध है कि शिखा द्वारा ऊपर से शक्ति मिलती है। यही आयु, तेजादि की वृद्धि का कारण है। परमहंस संन्यासी सदा ही ब्रह्म से मिले रहते हैं अतः उन्हें शिखा से शक्ति खेंचने की आवश्यकता नहीं।

पुरुष शक्ति का विकास मुख छाती आदि स्थानों में केश निकलने के द्वारा होता है, परन्तु स्त्री के यौन का विकास केश निर्गम द्वारा न होकर मासिक ऋतु धर्म, स्तनों में दूध और जरायु की वृद्धि द्वारा होता है। जब यौन विकास के साथ केश निर्गम का सम्बन्ध है तो जिस प्रकार किसी वृक्ष की शाखा काटने से उसमें बड़े वेग के साथ नवीन शाखा निकलती हैं इसी प्रकार प्रतिदिन केश काटते रहने से यौन का वेग भीतरी काम शक्ति के रूप में स्नायुओं में अधिक प्रकट होता है। जिसके फल स्वरूप वीर्य स्खलित होकर मनुष्य क्षीणता को प्राप्त होता है। इसीलिए ब्रह्मचारी और वानप्रस्थियों के लिए विशेष कर केश धारण की विधि बताई गई है। केशों के कारण काम सम्बन्धी नसों का वेग दबा रहता है और वीर्य को बाहर होने की उत्तेजना नहीं होती। शिखा रखने के कारण ही आर्यों में बल, आयु, तेज, ब्रह्मचर्य, मेधा, आत्म-चिन्तन और संयम की अधिकता है। इसके विपरीत

Scanned with CamScanner

चोटी न रखने वाली जातियों में उच्छृङ्खलता, कामुकता और विलासिता आदि दुर्गुण होते हैं। शिखा के प्रति आस्था घटने के कारण अब आर्यों में भी उपर्युक्त गुण घटते जा रहे हैं और दुर्गुण बढ़ रहे हैं।

सन्ध्या करते समय गायत्री मन्त्र द्वारा शिखा में गाँठ दी जाती है। उस समय अनेक सूक्ष्म तत्व आकर्षित होकर अपने अन्दर स्थित होते हैं। वे मस्तिष्क केन्द्र से निकल कर बाहर न चले जायें और हम अपनी साधना के लाभ से ही वञ्चित न हो जायें, इसलिये शिखा में गांठ लगाई जाती है। सदा ग्रन्थी लगाये रहने से मानसिक शक्तियों का बहुत सा अपव्यय बच जाता है। साइकिल के पहिये में भरी हुई हवा को रोकने के लिये एक छोटी 'बालट्यूब' नामक रबड़ की नली होती है जिससे होकर हवा तो जा सकती है परन्तु बाहर नहीं आ सकती। शिखा में लगी हुई गांठ से भी यह प्रयोजन सिद्ध होता है। वह बाहर के विचार और शक्ति को ग्रहण तो करती है परन्तु भीतर के तत्वों का अपव्यय नहीं होने देती। शिखा के नीचे बुद्धि का स्थान है। शिखा-बन्धन द्वारा बुद्धि को सचेत किया जाता है कि वह परमात्मा में लग जाये। प्रभु भक्ति में आत्मा और परमात्मा का योग आवश्यक है इसलिये मानों आत्मा और बुद्धि का गठजोड़ा किया जाता है।

संसार में चोटी का बड़ा महत्व है। लोग चोटी पर पहुंचने का यत्न करते हैं, गुफाओं में पहुँचने का नहीं। हमारे सिर के ऊपर रक्खी हुई चोटी हमें यह बोध कराती है कि हमें शिखर तक पहुँचना है। यह चोटी हमें बताती है कि हमारा ज्ञान चोटी का हो, विज्ञान चोटी का हो, धन एवं ऐश्वर्य चोटी का हो। हमारा बल चोटी का हो, हमारी विद्या चोटी की हो, बुद्धि चोटी

Scanned with CamScanner

की हो। हमें महत्तम उन्नति करनी है इसके स्वार्थ भी चोटी रखना आवश्यक है।

संसार में जितनी भी जातियां हैं उनमें आर्य लोग ही शीत-उष्ण के द्वन्द्वों को सहने में प्रसिद्ध हैं। आर्य शीतकाल में भी प्रातः सन्ध्या तथा स्नान से नहीं डरते। इसका कारण शिखा ही है। शिखा त्यागने से मर्मस्थानों में दुर्बलता आ जाती है जिससे गर्मी सर्दी सहन नहीं होती।

गोखुर परिमाण शिखा रखने से वीर्य की ऊर्ध्व गति होती है। ऊर्ध्वरेता ही जितेन्द्रिय होता है और जितेन्द्रियों के घरों में ही योगियों का जन्म होता है यही कारण है कि पतञ्जलि जैसे योग के आचार्य भारतवर्ष में ही उत्पन्न हुए। शिखा काटने से वीर्य अधोगामी हो जाता है। पुरुषत्व की हानि होने से स्त्रियां वश में न रहकर व्यभिचार में लग जाती हैं, निकम्मी और अधार्मिक सन्तान उत्पन्न होती है। इस प्रकार शिखा त्यागने में अनेक हानियाँ हैं।

मुसलमान ईसाई आदि चोटी नहीं रखते उन्हें हानि क्यों नहीं होती? इसका उत्तर यह है कि सूक्ष्म रूप से हानि अवश्य होती है परन्तु उसका अनुभव न होने से उसका पता नहीं लगता। मुसलमान और ईसाइयों की स्मरण शक्ति दाक्षिणात्य पण्डितों की अपेक्षा बहुत न्यून होती है। ईसाई मुसलमानों में आर्यों जैसा संयम भी नहीं है। इसका कारण शिखा ही है क्योंकि जो बात जिसके होने पर हो और न होने पर न हो वह उसी की ही मानी जाती है।

संन्यासी चोटी नहीं रखते क्या उन्हें हानि नहीं होती? हां, नहीं होती क्योंकि संन्यासाश्रम का विधान ७५ वर्ष की आयु के पश्चात् है। उस समय तक लघु मस्तिष्क, सुषुम्णा और ज्ञान-

Scanned with CamScanner

केन्द्र परिपक्व होजाते हैं। उस समय तक सिर की विशेष कर शिखा स्थान की त्वचा कठोर हो जाती है और शिखा से होने वाले लाभ भी ७५ वर्ष तक मिल जाते हैं। संन्यासी शीत और उष्णता को सहने में अभ्यस्त हो जाते हैं अतः उन्हें शिखा न रखने से कोई हानि नहीं होती।

शिखा और संसार की विभिन्न जातियां—

यद्यपि वर्तमान समय में शिखा रखने की प्रथा का ह्रास हो गया है और आर्यों के अतिरिक्त अन्य मतावलम्बी शिखा-विज्ञान की अनभिज्ञता के कारण शिखा रहित हो गये हैं परन्तु एक समय था जब सभी देशों और जातियों में शिखा रखने का प्रचलन था।

ईसाइयों के धर्मशास्त्र बाइबल में साम्सन के सम्बन्ध में एक कथा आती है कि वह एक बड़ा प्रतापी राजा था। उसके शत्रुओं ने उसे पराजित करने के अनेक उपाय किये परन्तु वे सफल न हुए। अन्त में फलस्तियों के सरदार ने उसकी प्रेमिका से कहा कि तू इसकी शक्ति का भेद ज्ञात कर इसके बदले हम तुझे बहुत साधन देंगे। उसके पूछने पर साम्सन ने बताया कि "उसकी शक्ति का कारण उसके सिर के केश हैं। यदि उसके सिर पर उस्तरा फेर दिया जाये तो वह निर्बल होकर और व्यक्तियों की भांति हो जायेगा।" तब—

"And she made her sleep on her knees, and she called for a man, and she caused him to shave off the seven locks of his head, and she began to afflict him and his strength went from him." (Judges 16. 19)

"उसने उसे अपने घुटनों पर सुला लिया और एक व्यक्ति

को बुला कर उसकी सातों लटें जो उसके सिर पर थीं कटवा दीं और उसे कष्ट देने लगी जिससे उसकी शक्ति जाती रही।"

प्राचीन समय में कई चोटियां रखने का विधान भी था। महर्षि दयानन्द ने संस्कार विधि में लिखा है [चूड़ा कर्म में] "पांचों ओर थोड़े थोड़े केश रखावे।" यही प्रथा विकृत होकर ईसाइयों में सात लटें हो गई होंगी। इससे ईसाइयों में चोटी रखना स्पष्ट है।

पीछे दिये गये डा० आई० ई० क्लार्क के उद्धरण से चीन में भी शिखा धारण करने की प्रथा का पता चलता है।

हिब्रू जाति के मान्य ग्रन्थ तलमड् में इस प्रकार के कई वर्णन हैं जिनसे पता चलता है कि उस जाति में भी शिखा रखने की पद्धति प्रचलित थी।

मुसलमान लोगों की तुर्की टोपी पर काले धागों का गुच्छा चोटी नहीं तो और क्या है ?

यूरोपियन फौजियों की टोपियों के ऊपर पीतल की शिखा होती है, राजाओं या सेनानायकों के सिर पर भी पक्षियों के पंखों की कलगी शिखा ही तो है। साफे का तर्रा और कुल्ला का ऊंचा उठा हुआ भाग भी शिखा का ही बोध कराते हैं। मनुष्यों में ही नहीं पशु-पक्षियों में भी शिखा दीखती है। मोर शिखी और मुर्गा ताम्रचूड़ के नाम से प्रसिद्ध है। राज सर्पों के ऊपर भी शिखा सुनी जाती है।

इस प्रकार धार्मिक, वैज्ञानिक और ऐतिहासिक सभी दृष्टियों से शिखा का मानव जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। अतः प्रत्येक आर्य को–नहीं, नहीं, प्रत्येक मनुष्य को चाहे वह किसी भी मत या सम्प्रदाय का मानने वाला हो बल, आयु, तेज और बुद्धि-वृद्धि के लिये आज से ही शिखा रखना आरम्भ कर देना चाहिये।

Scanned with CamScanner

यज्ञोपवीत का महत्व

वैदिक धर्म में १६ संस्कार प्रसिद्ध हैं। सारे ही संस्कार महत्वपूर्ण हैं परन्तु उपनयन संस्कार की महत्ता सभी संस्कारों से अधिक है। उपनयन से पूर्व ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य 'एकज' होते हैं, उपनयन से वे 'द्विज' बनते हैं। अर्थात् उनका पहला जन्म माता पिता से होता है और दूसरा जन्म आचार्य से होता है। जब तक यह संस्कार न हो जाये तब तकः—

न ह्यस्मिन्युज्यते कर्म किंचिदामौञ्जीबन्धनात् ॥

(मनु० २।१७१)

यज्ञोपवीत संस्कार हुए बिना द्विज किसी कर्म का अधिकारी नहीं। मनुजी के इस वचनानुसार न तो यज्ञोपवीत रहित बालक को वैदिक कर्मकाण्ड और यज्ञ करने का अधिकार है और न ही उसे द्विज श्रेणी में गिना जा सकता है। उपनयन होने पर ही वेदाध्ययन और यज्ञ करने का अधिकार प्राप्त होता है। यज्ञ का अर्थ केवल 'ओंअग्नये स्वाहा,' 'ओंसोमाय स्वाहा' कह कर अग्नि में आहुति डालना नहीं है। यज्ञ के अर्थ बड़े व्यापक हैं। 'यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म।' यज्ञ का अर्थ है—श्रेष्ठतम कर्म। यज्ञ शब्द 'यज्ञ देवपूजा संगतिकरण दानेषु' धातु से बनता है, अतः यज्ञ का अर्थ हुआ, ईश्वरोपासना, विद्वानों का सत्संग करना और दान देना। यज्ञोपवीत एक अधिकार पट्ट है। जिस प्रकार एक विद्यार्थी जब तक गाउन नहीं पहनता उसे डिगरी नहीं मिलती, एक वकील जब तक गाउन धारण नहीं करता उसे वकालत करने का अधिकार प्राप्त नहीं होता, इसी प्रकार जब तक यज्ञोपवीत धारण नहीं किया जाता तब तक किसी भी बालक को सन्ध्योपासना, अग्नि-होत्र, माता पिता आचार्य की सेवा, अतिथिपूजन, बलिवैश्यवदेव और दान करने का अधिकार प्राप्त नहीं होता। इस

Scanned with CamScanner

प्रकार यज्ञोपवीत धारण न करना अपने आप को : अधिकारों से वञ्चित रखना है। अतः उन्नति के अभिलाषियों को इस ओर अधिक ध्यान देना चाहिये।

परन्तु आज की सभ्य मण्डली (!) में इस अत्यन्त महत्वपूर्ण संस्कार की जो अवहेलना और दुर्दशा हो रही है उसे लिखते हुए लेखनी रुकती है, सिर चकराता है और हृदय रोता है। जिस यज्ञोपवीत को औरङ्गजेब की चमचमाती तलवार हमारे गले से न उतरवा सकी आज लार्ड मैकाले के शिष्य उसे फैंक रहे हैं। जो यज्ञोपवीत आर्य शरीर की शोभा बढ़ाने वाला और बल तथा शक्ति को देने वाला समझा जाता था आज वही यज्ञोपवीत मनुष्य की उन्नति में बाधक समझा जाता है। आज जबकि अन्य जातियां अपने सांस्कृतिक, सामाजिक और राष्ट्रिय चिह्नों को खोज कर उन्हें पुनः धारण कर रही हैं, तब हम अपने पवित्र चिन्हों को हेय और तुच्छ समझ कर फैंक रहे हैं। शोक! महाशोक!!

जो लोग यज्ञोपवीत धारण करते हैं उनमें भी अधिकांश लोग ऐसे हैं जो उसे किसी विशेष लौकिक लाभ से ही पहनते हैं। वे लोग न तो उसके कर्तव्यों पर ध्यान देते हैं और न उन के नियमों पर। उनके लिये तो यज्ञोपवीत एक सूत का डोरा है जो सन्दूकों की चाबियाँ बांधने के काम आता है। राष्ट्र कवि मैथिली शरण गुप्त के मर्मान्तक शब्दों में:—

यज्ञोपवीत देख उनका धन्य भाग सराहिये।
पर चाबियों के बाँधने को डोर भी तो चाहिये ॥

पाठक गण! यह यज्ञोपवीत चाबियां का गुच्छा लटकाने के लिये नहीं है। यह तो एक अत्यन्त महत्वपूर्ण, पवित्र और

वैज्ञानिक संस्कार है। यज्ञोपवीत धारण करते समय अथवा यज्ञोपवीत बदलते समय जिस मन्त्र का उच्चारण किया जाता है उसीसे यज्ञोपवीत की महिमा स्पष्ट है। वह मन्त्र यह है:—

यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् ।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुंच शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।१।
यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि ।२।

(पारस्कर० २।२।११)

यह यज्ञोपवीत परम पवित्र है और प्रजापति के साथ प्रकट हुआ है। यह श्वेत वर्ण का यज्ञोपवीत आयु को देने वाला है। इसे तू धारण कर यह तुझे बल और तेज प्रदान करे ॥१॥

तू यज्ञोपवीत है तुझे यज्ञ कर्म के लिये ग्रहण करता हूँ और अपने आपको यज्ञोपवीत से बाँधता हूँ ॥२॥

'यज्ञोपवीतं परमं' इस मन्त्र में यज्ञोपवीत को आयु, बल और तेज देने वाला कहा गया है। यह सत्य है कि इन तीन तारों में बल और तेज दिखाई नहीं देता परन्तु जो व्यक्ति अपने आप को इस यज्ञोपवीत से सूचित ब्रह्मचर्य आदि नियमों से बाँधेगा और आठ प्रकार के मैथुनों से अपने आपको बचाता हुआ वैदिक नियमों का पालन करेगा उसका बल, शक्ति, तेज, मेधा और स्मरण शक्ति निश्चय ही बढ़ेंगे, इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है। अतः यज्ञोपवीत इन गुणों को देने वाला है।

जैसे २४ हजार मील के घेरे वाली विस्तृत भूमि का छोटे से चित्र या गोले द्वारा ज्ञान कराया जाता है उसी प्रकार यह यज्ञोपवीत भी विश्व-ब्रह्माण्ड का एक सारगर्भित छोटा सा नकशा है। यज्ञोपवीत में जो विज्ञान भरा हुआ है हम यहाँ उसकी कुछ विवेचना करते हैं।

Scanned with CamScanner

यज्ञोपवीत क्या है ? यज्ञोपवीत शब्द 'यज्ञ' और 'उपवीत' इन दो शब्दों से बना है जिसका अर्थ है यज्ञों को प्राप्त कराने वाला। शतपथ ब्राह्मण में—

यज्ञो वै विष्णु। (शत० १।१।१।२)

यज्ञ से समस्त ब्रह्माण्ड में व्याप्त परमात्मा को ही कहा गया है। इसलिये यज्ञोपवीत का अर्थ 'परमात्मा को प्राप्त कराने वाला' है। उपनयन भी इस संस्कार का दूसरा पर्याय वाची शब्द है, जिसका अर्थ है ऐसा संस्कार जिसके द्वारा बालक को गुरु के समीप लेजाया जाय। क्योंकि यह सूत्र द्विजाति को ब्रह्म-तत्व तथा वेद-ज्ञान की सूचना देता है इसलिए इसे ब्रह्म-सूत्र भी कहते हैं। इसी प्रकार इसे यज्ञ-सूत्र, सावित्री-सूत्र, जनेऊ, परिवीत और वास भी कहते हैं।

उपनयन संस्कार के लिये ऋषियों ने भिन्न भिन्न वर्णों के लिये भिन्न भिन्न ऋतु निर्धारित की हैं और यह ऋतु-क्रम पूर्ण वैज्ञानिक है—

वसन्ते ब्राह्मणं ग्रीष्मे राजन्यं शरदि वैश्यम् ॥

ब्राह्मण का यज्ञोपवीत वसन्त ऋतु में, क्षत्रिय का ग्रीष्म ऋतु में और वैश्य का शरद ऋतु में होना चाहिये। शतपथ ब्राह्मण के अनुसार ये ऋतुएँ भी क्रमश: ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य हैं। ब्राह्मण स्वभाव से शान्त होता है और वसन्त ऋतु भी। वसन्त में न पौष माघ का सा भयंकर शीत होता है और न ज्येष्ठ अषाढ़ की घोर गर्मी। अत: ब्राह्मण बालक के लिये यही ऋतु ठीक है। ग्रीष्म ऋतु ताप प्रधान है और क्षत्रिय बालक में भी वह तेज और पराक्रम स्वाभाविक रूप से रहता है। अत: क्षत्रिय बालक का उपनयन ग्रीष्म ऋतु में ही होना चाहिये। व्यापार कार्य शरद ऋतु में आरम्भ होता है। धन-धान्य परिपूर्ण शरद ऋतु में वैश्य प्रकृति

Scanned with CamScanner

का प्रतिबिम्ब स्पष्ट दिखाई देता है। शरद काल की पोषण शक्ति भी वैश्य प्रकृति के अनुकूल ही है फलतः इन गुणों के विकास के लिये वैश्य बालक का उपनयन शरद ऋतु में ही होना चाहिये।

उपनयन किस आयु में होना चाहिये इसके लिये भी विभिन्न वर्णों के लिये पृथक् पृथक् आदेश है। यथाः—

अष्टवर्षं ब्राह्मणमुपनयेत् गर्भाष्टमं वा, एकादश वर्षं राजन्यं, द्वादशवर्षं वैश्यम् (पारस्कर. २।२।१-३)

ब्राह्मण बालक का उपनयन आठवें वर्ष में अथवा गर्भ से आठवें वर्ष में, क्षत्रिय का ग्यारहवें और वैश्य का बारहवें वर्ष में करना चाहिये। यदि किसी विशेष कारण से उक्त समय पर यह कार्य न हो सके तो उससे दुगुने अर्थात् ब्राह्मण बालक का १६ क्षत्रिय का २२ और वैश्य का २४ वर्ष की अवस्था तक हो सकता है, जैसा मनुजी ने कहा है:—

आषोऽशाद् ब्राह्मणस्य सावित्री नाति वर्तते।
आद्वाविंशात्क्षत्रबन्धोरा चतुर्विंशतेर्विशः (मनु० २।३८)

सोलह वर्ष से आगे ब्राह्मण का, बाइस वर्ष से आगे वैश्य का और २४ वर्ष से आगे क्षत्रिय के यज्ञोपवीत संस्कार का अतिक्रमण नहीं होना चाहिये। इसके पश्चात् भी संस्कार न हो तो ये पतित हो जाते हैं और इनकी 'व्रात्य' संज्ञा हो जाती है।

यह काल-विभाग भी अत्यन्त युक्तियुक्त एवं तर्क सम्मत है। वैदिक साहित्य में ३३ देवता प्रसिद्ध हैं अर्थात् ८ वसु, ११ रुद्र, १२ आदित्य, इन्द्र और प्रजापति। देवताओं में वसु ब्राह्मण स्वरूप हैं, रुद्र क्षत्रिय स्वरूप और आदित्य वैश्य स्वरूप। ब्राह्मण देवराज्य में इन आठ वसुओं के साथ मिलकर शक्ति संचय करता है। अतः ८ वर्ष की अवस्था में ही ब्राह्मण बालक का यज्ञोपवीत

Scanned with CamScanner

उचित है। रुद्र ११ हैं। क्षत्रिय की भाँति ये भी रजोगुण प्रधान है, अतः क्षत्रियों के संस्कार के लिये यही समय उपयुक्त है। आदित्य १२ हैं। वैश्य की भांति ये अपनी संचित सामग्री से संसार का पोषण करते हैं। सम्पूर्ण धन-धान्य इन्हीं की कृपा से फलते और पकते हैं। फलतः वैश्यों के लिये बारहवें वर्ष में इस संस्कार का होना लाभप्रद है।

पारस्कर गृह्य सूत्रकार ने छन्दों से सृष्टि का विस्तार बताते हुये लिखा है :—

गायत्र्या छन्दसा ब्राह्मणमसृजत्,
त्रिष्टुभा राजन्यं जगत्या वैश्यम् ॥

गायत्री छन्द से ब्राह्मण की सृष्टि हुई, त्रिष्टुप् से क्षत्रिय की और जगती छन्द के योग से वैश्य की। गायत्री से ब्राह्मण का दूसरा जन्म कहा है। गायत्री छन्द का एक पाद आठ अक्षर का होता है अतः ब्राह्मण बालक के लिये आठ वर्ष से अधिक उपयुक्त और कौनसा समय हो सकता है। आठ का द्विगुण १६ होते हैं अतः १६ वर्ष ब्राह्मण के उपनयन की अन्तिम अवधि है। त्रिष्टुप् से क्षत्रिय की उत्पत्ति कही है। त्रिष्टुप् के प्रत्येक पाद में ११ अक्षर होते हैं अतः क्षत्रिय का ११ वर्ष की अवस्था में उपनयन उचित ही है। ग्यारह का दुगना २२ होता है अतः २२ वर्ष क्षत्रिय के उपनयन की अन्तिम अवधि है। जगती छन्द से वैश्य की उत्पत्ति मानी गई है। जगती छन्द का प्रत्येक पाद १२ अक्षर का होता है, इसलिए वैश्य का यज्ञोपवीत बारहवें वर्ष में ही उचित है। १२ का दुगना २४ होता है अतः २४ वर्ष वैश्य के उपनयन की अन्तिम अवधि है।

इस विवेचन के पश्चात् हम यज्ञोपवीत की निर्माण विधि की ओर आते हैं। यज्ञोपवीत हाथ की चार अँगुलियों पर ९६

Scanned with CamScanner

चार लपेटा जाता है। इस प्रकार यज्ञोपवीत का परिमाण ९६ चप्पे बनता है। यह ९६ अँगुल का ही क्यों होता है, इसके निम्न कारण हैं :—

चतुर्वेदेषु गायत्री चतुर्विंशतिकाक्षरी ।
तस्माच्चतुर्गुणं कृत्वा ब्रह्म तन्तुमुदीरयेत ॥

(शिष्ट स्मृति)

अर्थात् चारों वेदों में गायत्री २४ अक्षर की होती है। इसलिये ब्रह्मसूत्र भी २४×४=९६ चप्पे का होता है। यज्ञोपवीत में बालक को गायत्री और वेद दोनों का अधिकार प्राप्त होता है, अतः इस संख्या को दृष्टि रखते हुये ९६ अँगुल का यज्ञोपवीत पहनने का विधान है।

छान्दोग्य परिशिष्ट में इसी प्रश्न का समाधान करते हुए कहा गया है:—

तिथिवारं च नक्षत्रं तत्व वेद गुणान्वितम् ।
कालत्रयं च मासाश्च ब्रह्मसूत्रं हि षण्णवम् ॥

अर्थात् १५ तिथि, ७ वार, २७ नक्षत्र, २५ तत्व, ४ वेद, ३ गुण काल, १२ मास इनकी कुल संख्या ९६ होती है। यज्ञोपवीत में ये सब निहित हैं अतः यज्ञोपवीत ९६ अँगुल का होता है।

मानव मान ८४ अँगुल का और देवमान ९६ अँगुल का होता है। यज्ञोपवीत धारण कर वेद-व्रत और ब्रह्म-व्रत का अनुष्ठान कर मनुष्य को देवत्व और अन्त में ब्रह्मत्व प्राप्त हो इसीलिए यज्ञोपवीत देवमान अर्थात् ९६ अँगुल का बनाया जाता है।

प्रत्येक व्यक्ति अपनी अँगुलियों से ९६ अँगुल का होता है यदि सन्देह हो तो माप कर देखलें। ९६ अँगुल का यज्ञोपवीत हमें यह स्मरण कराता है कि यह यज्ञोपवीत कन्धे से कटि प्रदेश

Scanned with CamScanner

तक ही नहीं है अपितु शरीर का अंग प्रत्यंग और प्रत्येक रोम इससे बँधा हुआ है।

यज्ञोपवीत में तीन तार होते हैं। तीन ही तार क्यों ? इसका भी वैज्ञानिक रहस्य है। हमारे यहाँ तीन की संख्या का बड़ा भारी महत्व है। सत्व, रज और तम गुण तीन, पृथ्वी, अन्तरिक्ष और द्यु-लोक तीन, गार्हपत्य, आहवनीय, दक्षिणा-अग्नि तीन और ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य-यज्ञोपवीत के अधिकारी भी तीन। अतः यज्ञोपवीत में तीन धागों का होना सुसंगत है।

यज्ञोपवीत ब्रह्मचर्य, गृहस्थ और वानप्रस्थ तीन आश्रमों में रहते हुए धारण किया जाता है। चतुर्थाश्रम संन्यास में पहुंचने पर इसे उतार दिया जाता है। क्योंकि यह तीन आश्रमों में धारण किया जाता है इस अभिप्राय से भी इस में तीन धागे हैं।

यज्ञोपवीत के तीन धागे प्रकृति के तीन गुणों—सत्व, रज और तम के द्योतक हैं। बाल्यावस्था में तमोगुण प्रधान रहता है। बालक अन्धकार में रहता है। ब्रह्मचर्यावस्था में गुरु के सम्पर्क में वह अज्ञान दूर हो जाता हैं। ब्रह्मचर्यावस्था के पश्चात् मनुष्य गृहस्थाश्रम में आता है जिसमें रजोगुण प्रधान होता है। शास्त्रानुसार श्रेष्ठ कर्म करते हुए रजोगुण से अलग रहना ही गृहस्थ का मुख्य धर्म है। पूर्ण ज्ञान प्राप्त करके वानप्रस्थ में सत्व-गुण को भी त्याग देना चाहिये और संन्यास में त्रिगुणातीत हो जाना चाहिये। ये तीन धागे मनुष्य को त्रिगुणातीत होने का दिव्य संदेश देते हैं। जब मनुष्य त्रिगुणातीत हो जाता है तो उसे यज्ञोपवीत की आवश्यकता नहीं रहती।

यज्ञोपवीत के तीन तार परमात्मा-आत्मा और प्रकृति—इन तीन सत्ताओं का सम्यक् ज्ञान प्राप्त करने का भी संकेत देते हैं। यज्ञोपवीत धारी परमात्मा क्या है ? उसका स्वरूप क्या है ? इस

Scanned with CamScanner

की प्राप्ति कैसे हो सकती है ? आदि बातों को जानने का प्रयत्न करता है। इसी प्रकार मैं कौन हूँ ? कहाँ से आया हूँ ? मुझे कहाँ जाना है ? मेरे जीवन का क्या लक्ष्य है ? इत्यादि आत्म-ज्ञान सम्बन्धी समस्याओं को सुलझाता है। प्रकृति क्या है ? इससे किस प्रकार उपयोग लेकर जीवन को सुखी बनाया जा सकता है ? आदि प्रकृति के ज्ञान को प्राप्त करने का प्रयत्न करता है। जो यज्ञोपवीतधारी-'मुझे परमात्मा, आत्मा और प्रकृति का ज्ञान प्राप्त करना है,—इस रहस्य को हृद यङ्गम करके यज्ञोपवीत धारण करता है उसीका यज्ञोपवीत धारण करना सार्थक है।

यज्ञोपवीत के तीन तार उत्तम विचार, उत्तम वाणी और उत्तम आचार की ओर भी संकेत करते हैं।

यज्ञोपवीत के तीन धागे मनुष्य के तीन ऋण—देव-ऋण, ऋषि ऋण और पितृ ऋण की ओर भी संकेत करते हैं। यज्ञोपवीत के तीन तार इस बात के बोधक हैं कि कोई भी व्यक्ति स्वतन्त्र नहीं अपितु तीन ऋणों से बँधा हुआ है और उन्हें उतारने का प्रयत्न करना है। कितनी सुन्दर, उदात्त और महान् शिक्षा है। यदि प्रत्येक व्यक्ति यह अनभव करे कि मुझे ये तीनों ऋण उतारने हैं तो फिर लोगों में स्वार्थ का नाम तक भी न रहे। सारा देश स्वर्ग तुल्य हो जाये। कोई भी व्यक्ति दुःख और निरक्षर न रहे। सारा संसार देश-भक्ति और प्रभु-भक्ति की तरङ्गों से तरङ्गित हो उठे।

यज्ञ से देव-ऋण दूर हो जाता है, विद्याध्ययन और अध्यापन से ऋषि-ऋण दूर होता है और माता पिता की सेवा तथा सुप्रजा निर्माण से पितृ ऋण दूर होता है।

यज्ञोपवीत के तीन धागे ब्रह्मग्रन्थि द्वारा आपस में जुड़े रहते हैं यह इस बात का बोधक है कि मनुष्य ज्ञान, कर्म और

Scanned with CamScanner

उपासना तीनों को साथ साथ प्राप्त करें।

प्रत्येक धागे में तीन तीन तन्तु होते हैं। ये तन्तु साधारण तन्तु नहीं अपितु विभिन्न देवताओं के निवास स्थान हैं। ये नौ देवता कौन से हैं इनके लिये ब्रह्म संग्रह में कहा है :—

ओङ्कार:, प्रथमस्तन्तुर्द्वितीयश्चाग्नि देवत: ।
तृतीयो नागदेवत्यश्चतुर्थ: सोम देवत: ॥
पंचम: पितृदेवत्य: षष्ठश्चैव प्रजापति ।
सप्तमो वायुदेवत्यश्चाष्टमो यम देवत: ॥
नवम: सर्वदेवत्य इत्येते नव तन्तुव: । (२।४६–५१)

यज्ञोपवीतधारी बालक को यज्ञोपवीत में स्थित नौ देवताओं के निम्न गुणों से अपने आप को भूषित करना चाहिये :—

(१) ओङ्कार—ब्रह्मज्ञान ।
(२) अग्नि—तेजस्विता, उन्नति की भावना ।
(३) अनन्त—धैर्य स्थिरता, भार उठाना ।
(४) चन्द्रमा—सौम्यता, आह्लादकता, शीतलता, मधुरता
(५) पितृगण—स्नेह शीलता, संरक्षण, कुल धर्म धारण, आशीर्वाद दान ।
(६) प्रजापति—प्रजापालन, स्नेह और सौहार्द ।
(७) वायु—गतिशीलता, पवित्रता, बलशालिता ।
(८) सूर्य—प्रकाश धारण, अन्धकार नाश ।
(९) सर्वदेवता—समस्त दिव्य गुण और सात्विक जीवन ।

जो व्यक्ति प्रतिदिन इन देवताओं के गुणों का ध्यान करते हुए उन गुणों को अपने जीवन में धारण करने का प्रयत्न करेगा

Scanned with CamScanner

उसका जीवन निश्चय ही शुद्ध, पवित्र, उच्च और महान् होगा।

नौ तन्तुओं का एक और भी रहस्य है। हमारे शरीर में नौ द्वार हैं यथा—दो आँख, दो कान, दो नाक के छिद्र, एक मुख और दो मलमूत्र त्यागने के द्वार। इन द्वारों से ही अपवित्र विचार हमारे अन्दर आते हैं और इनके द्वारा ही हमारी शक्ति क्षीण होती है, जैसा कहा है:—

इन्द्री द्वार झरोखा नाना। तहं तहं सुर बैठे कर थाना।
आवत देखहिं विषय बियारी। ते हठि देहिं कपाट उघारी।

यज्ञोपवीत के ये नौ तन्तु हमें यह संदेश देते हैं कि हमें प्रत्येक द्वार पर एक एक चौकीदार है जिससे कुविचार हमारे मन में न आये।

यज्ञोपवीत निर्मित हो जाने पर उसमें प्रणव रूपी महामन्त्र का उच्चारण करते हुए ब्रह्मग्रन्थि लगाई जाती है। ब्रह्मसूचक होने के कारण ही इसे 'ब्रह्मग्रन्थि' कहते हैं। संसार में यह परिपाटी प्रचलित है कि यदि हम किसी वस्तु को विशेष रूप से स्मरण रखना चाहते हैं, तो कपड़े में गांठ लगा लेते हैं। ब्रह्मप्राप्ति रूप उद्देश्य की स्मारक होने के नाते इसे ब्रह्म ग्रन्थि कहते हैं। प्रणव=ओम् के जाप द्वारा ईश्वर-प्राप्ति की शास्त्रीय पद्धति का कितना सुन्दर संदेश है।

ब्रह्म ग्रन्थि के ऊपर यज्ञोपवीत में पांच गांठें होती हैं। ये पांच गांठें पांच महायज्ञों—ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, अतिथियज्ञ और बलिवैश्वदेव यज्ञ को करने का आदेश देती हैं। पूर्वोक्त तीन ऋणों से उऋण होने के लिये इन यज्ञों का करना आवश्यक और अनिवार्य है।

यज्ञोपवीत बायें कन्धे पर से पहना जाकर हृदय और वक्षस्थल पर से होता हुआ कटिप्रदेश तक पहुँचता है। इसमें भी

Scanned with CamScanner

एक बहुत बड़ा वैज्ञानिक रहस्य छिपा हुआ है। ऐसा सुना जाता है कि शरीर के भीतरी भाग में पीठ से जाती हुई कन्धे में होकर छाती के मार्ग से कमर तक एक प्राकृतिक रेखा है। इसकी आकृति धनुष के समान है। वह रेखा विद्युत् के समान इन्द्रियों में उष्णता उत्पन्न करके मनुष्य में काम क्रोध आदि उत्पन्न करती है। इस रेखा का प्रभाव लजवन्ती बूटी के समान है जो स्पर्श मात्र से कुम्हला जाती है। यज्ञोपवीत उसी रेखा पर ठहरता है, यही कारण है कि यज्ञोपवीतधारी यज्ञोपवीत रहित व्यक्तियों के समान कामी, क्रोधी या हिंसक नहीं होते।

यज्ञोपवीत को इस प्रकार धारण करने का एक और भी रहस्य है। प्रत्येक व्यक्ति के ऊपर तीन ऋणों का भार है और भार कन्धे पर वहन किया जाता है इसलिये यज्ञोपवीत कन्धे पर होता है। बोझ को वही उठा सकता है जो कटि बद्ध है। इसलिये यज्ञोपवीत कटि प्रदेश पर लटकता है। संसार में सफल वही व्यक्ति हो सकता है जो उद्देश्य को अपने समक्ष रखता है और लक्ष्य उसी के समक्ष रहता है जो किसी कार्य को हृदय से करे, अतः यज्ञोपवीत हृदय के ऊपर होता है।

यज्ञोपवीत के सम्बन्ध में दो बातें और ध्यान रखने योग्य हैं, एक यह कि प्रत्येक व्यक्ति को एक समय में एक ही यज्ञोपवीत धारण करना चाहिये, दो नहीं। दूसरी यह कि यज्ञोपवीत को पीले रंग या केसर आदि से रंगना नहीं चाहिये क्योंकि मन्त्र में भी 'शुभ्र' श्वेत कहा गया है।

मेखला

उपनयन में मेखला भी बाँधी जाती है। मेखला से प्राण और अपान को बल मिलता है फलतः हर्निया रोग नहीं होता। इससे ब्रह्मचारी का बल बढ़ता है और कमर की शक्ति बढ़ती है।

Scanned with CamScanner

आजकल नवयुवकों की कमर झुक जाती है उसका कारण मेखला का धारण न करना ही है। अंग्रेज लोग जो बेल्ट Belt बाँधते हैं यह मेखला का दूसरा रूप है। परन्तु मेखला में जो गुण हैं वे पेटी या कमरबन्द में कहाँ आ सकते हैं?

स्त्रियों को यज्ञोपवीत अधिकार

कुछ धर्म के ठेकेदार स्त्रियों को इस महत्वपूर्ण संस्कार से वञ्चित रखना चाहते हैं। परन्तु प्राचीन काल में स्त्रियों को यज्ञोपवीत धारण करने का अधिकार था। इस विषय में महर्षि दयानन्द की सम्मति है कि—

स्त्रियों को भी विद्या सम्पादन का अधिकार पहले था और उसके अनुकूल उनका व्रत-बन्ध पूर्व में करते थे।

(व्याख्यान मंजरी सातवाँ व्याख्यान)

प्राचीन काल में स्त्रियाँ यज्ञोपवीत धारण करती थीं इस सम्बन्ध में अनेक उद्धरण दिये जा सकते हैं। यथा:—

प्रावृत्तां यज्ञोपवीतनीमुभ्यदा नयज्जथेत्। (गो० २।१।१९

तब वर यज्ञोपवीत धारण किए हुये और ओढ़नी डाले हुए वधू को लाते हुए जपे—

महाकवि बाण ने कादम्बरी की प्रमुख पात्र महाश्वेता को यज्ञोपवीत धारी वर्णन किया है, देखिये—

चूडामणि चन्द्रमयूख जालेनेव मण्डली कृतेन ब्रह्मसूत्रेण पवित्री कृतकायाम् ॥

[कादम्बरी निर्णय० प्रेस पृष्ठ २४८।३—४]

वेद में भी स्त्रियों के लिए यज्ञोपवीत का स्पष्ट विधान है:—

भीमाजाया ब्राह्मणस्योपनीता। [ऋ० १०।१०९।४]

Scanned with CamScanner

यज्ञोपवीत धारण करने वाली ब्राह्मण की जाया बड़ी शक्तिशालिनी होती है।

इस प्रकार वेदादि शास्त्रों के द्वारा स्त्रियों को यज्ञोपवीत पहनने का अधिकार है, और उन्हें यज्ञोपवीत अवश्य धारण करना चाहिए।

यज्ञोपवीत और गायत्री—

यज्ञोपवीत के अवसर पर गायत्री मन्त्र का भी उपदेश दिया जाता है। प्रश्न उत्पन्न होता है यह क्यों? इसका इतना महत्व क्यों? इस पर संक्षेप से विचार किया जाता है। उपनयन संस्कार होजाने पर वेदारम्भ संस्कार में वेद का ही आरम्भ अपेक्षित है परन्तु उस समय विद्यार्थी वेदाङ्गों को न जानने के कारण वेद में चल नहीं सकता, अतः गायत्री जो वेदों का सार भूत है उसी का उपदेश किया जाता है। गायत्री का ऋषि है 'गाथिनो विश्वामित्रः'। गाथिनः का अर्थ है गुरुकुल में रहकर वेद पढ़ने वाला और विश्वामित्र का अर्थ है सर्व मित्र, सबसे प्रेम करने वाला। ब्रह्मचारी को वेद का अध्ययन करना है और प्राणीमात्र के साथ प्रेम का व्यवहार करना है इस उद्देश्य के अनुरूप उसे गायत्री की शिक्षा दी जाती है।

यज्ञोपवीत की सार्वभौमिकता—

एक समय था जब यज्ञोपवीत सारे संसार में प्रचलित था कुछ प्रमाण यहाँ दिये जाते हैं—

यूनानियों में यज्ञोपवीत—

Kennet साहब ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि "रोमन लोग Prastestta प्रास्टैस्टा नाम का यज्ञोपवीत धारण करते थे और जब तक किसी रोमन के यह यज्ञोपवीत नहीं होता था

Scanned with CamScanner

उसे धार्मिक सभा व राज्यसभा में स्थान नहीं मिलता था।"

पारसियों में यज्ञोपवीत—

पारसियों में नवोजात संस्कार होता है जिसमें बालक बालिकाओं को 'कुशती' नामक सूत्र पहनाया जाता है। इस सम्बन्ध में प्रो० वाडिया ने लिखा है—

"It corresponds to the Hindu Upanayan. It marks the initiation of a boy or girl into the religion and therefore the ceremony is called the Navjote which literally means new birth.'

(Zoroaster by Prof. A. R. Wadia P. 40)

अर्थात् यह हिन्दुओं के उपनयन संस्कार के साथ मिलता है तथा इसके द्वारा बालक बलिकाओं को धर्म में दीक्षा दी जाती है। इस संस्कार को 'नवजोत' कहते हैं जिसका शब्दार्थ नया जन्म है।

ईसाइयों में यज्ञोपवीत—

रोमन कैथोलिक ईसाई यज्ञोपवीत की भांति ऊन का एक विशेष सूत्र हर समय अपनी कमर में बाँधे रहते हैं। यज्ञोपवीत की भांति उसमें तीन गाँठे भी होती हैं। प्रोटेस्टैण्ट ईसाई पादरी भी कमर में रस्सी बाँधना धार्मिक अनुष्ठान मानते हैं।

मुसलमानों में यज्ञोपवीत—

मुसलमानों में सूत्रात्मक यज्ञोपवीत की भाँति गण्डे का प्रचलन है। हज्ज यात्रा के समय हाजियों को अपने गले में सफेद रंग का एक वस्त्र खण्ड बाँधना पड़ता है यह भी यज्ञोपवीत का ही प्रतीक है।

Scanned with CamScanner

सिखों में यज्ञोपवीत—

सिखों में भी यज्ञोपवीत का प्रचलन था। सिख गुरुओं के शास्त्रीय विधि से यज्ञोपवीत संस्कार हुए थे। यहाँ स्थानाभाव के कारण दो प्रमाण दिये जाते हैं:—

गुरु नानक देव—

असि विधि श्री नानक गति दानी।
उपदेशन की उचरत वाणी।
वदन वदन विप्रन वरि आई।
यज्ञोपवीत दियो पहराई॥

(नानक प्रकाश पृ० ४२)

दशवें गुरु गोविन्द—

पन्थ प्रकाश में ज्ञानीसिंह जीने गोविन्द सिंह के विवाह समय के शरीर सौन्दर्य का वर्णन करते हुए लिखा है:—

पीत पुनीत उपरना धोती जोति नवि छवि छाजै।
पीत जनेऊ मनो वदन ससि पै बिजरी बिजरी भ्राजै॥

(पन्थ प्रकाश पृष्ठ ५१०)

जैनियों में यज्ञोपवीत—

जैन तीर्थांकर भी यज्ञोपवीत धारण करते थे इस विषय में ऋषभदेवजी का प्रमाण यहाँ दिया जाता है:—

कण्ठ हारे लतां विभ्रन् कटि सूत्रं कटातटे।
ब्रह्म सूत्रोपवीताङ्गम सं गांगोप्प मिवाद्रिराट्॥

(आदि पुराण पृ० ५८०)

यहाँ ऋषभदेव का वर्णन करते हुए बताया गया है कि अनेक कण्ठ में दिव्य हार शोभा दे रहा था, कमर में करधनी

थी और वक्षस्थल पर परम पवित्र यज्ञोपवीत था इसलिये ऋषभ-देव मेरु पर गंगा की धारा के समान शोभा दे रहे थे।

दुःख का विषय है कि इतने पवित्र और सर्व प्रचलित यज्ञोपवीत को पहनने का विचार लोगों से हटता जा रहा है। बाबू लोग ईसा की फांसी के चिह्न नैकटाई को प्रेम से लगाते हैं, हैट के चमड़े को गौरव से सिर पर रखते हैं, पुलिस के थानेदार और चपड़ासी यज्ञोपवीत की भांति चमड़ों की पेटी को पहनने में गौरव अनुभव करते हैं, परन्तु यज्ञोपवीत उन्हें भार प्रतीत होता है। ऐसे व्यक्तियों को डांटते हुए महर्षि दयानंद ने ठीक ही कहा है :—

"जब पतलून आदि वस्त्र पहनते हो, और तमगों की इच्छा करते हो, तो क्या यज्ञोपवीत का कुछ बड़ा भार हो गया ॥"

(सत्यार्थ० समुल्लास ११)

ऋषि सन्तानों! भारत माता के नौनिहालों!! आय नव युवको! अब चेतो! विधिवत् अपना यज्ञोपवीत संस्कार कराके उन्नति के पथ पर बढ़ो। पाश्चात्य चकाचौंध से बच कर वेदों की ओर लौटो।

ओ३म् शान्ति।

★

ई वैदिक पुस्तकालय मुम्बई
सम्पर्क 9029421718

Scanned with CamScanner